यह ऑस्ट्रिया (ओस्ट टिरोल) से छोटा सा उपहार है। यह छोटी कहानी प्रसिद्ध ऑस्ट्रिया के लेखक 'लेने मेयर स्कुमन्ज' के द्वारा लिखी गई थी। इसमें इटली के कलाकार 'सैलवाटोर सियासिया' के दृष्टान्त हैं।

छोटा उल्लू

बहुत समय पहले जब पशु तथा मनुष्य एक ही भाषा बोलते थे, एक छोटा उल्लू एक जंगल में रहता था जो स्वप्न के पर्वतों के पीछे था। वह छः भाई-बहनों में सबसे छोटा था तथा वह पुराने वृक्ष के खोखले को जहाँ उसके माता-पिता रहते थे, सबसे आखिरी में छोड़ा। उसके माँ-बाप ने उसको उड़ना, चूहे पकड़ना तथा सूर्य की किरणों का सेवन करना सिखाया था। इसके बाद उन्होंने कहा – "ऐ छोटे उल्लू, साहसी बनो तथा दुनिया को देखो।" इस पर उल्लू ने पूछा – "क्या मैं अभी छोटा नहीं हूँ?" उल्लू के माँ-बाप ने अपनी चोंच जोर से भींची एवं लम्बी आह भरते हुए कहा – "बड़े-उल्लू, जिसने सबकुछ का सृजन किया है वह तुम्हारी यात्रा में तुम्हारी रक्षा करेगा। इसके अलावा तुम कुछ नियम जानते ही हो – जब तुम शिकार के लिए जाते हो तो अपने शिकार को तुरन्त मार दो जिससे उसे दुःख न हो, ऐसा करने से शिकार और ज्यादा स्वदिष्ट होता है। और प्रकाश का आनंद लेने से कभी मत चूकना चाहे वह धीमा प्रकाश ही क्यों न हो। जहां तक लम्बा उड़ने का सवाल है – यह बारम्बार अभ्यास से ही होता है। इसके अलावा इस मामले में और कुछ नहीं कहा जा सकता।"

छोटे उल्लू ने अपने सिर चारों दिशाओं में घुमाया तथा वह अपने माँ-बाप को एवं उस बृक्ष को जो उसका घर था, एक बार ध्यान से देखा। फिर उसने कर्कश भरी आवाज में चिल्लाते हुए सबसे विदाई ली। तब उसने अपने पंखों को फैलाया और उड़ गया।

स्वप्न के पर्वतों के पीछे जंगल बहुत बड़ा तथा जानवरों से भरा हुआ था। कुछ उड़ान भरने के बाद उल्लू ने एक मैदानी इलाके में पथरीला जंगल पाया; वह एक उंची चोटी पर बैठ गया और अस्त होते हुए सूर्य का आनंद लेने लगा। उसी के नीचे एक जंगली बिल्ली पत्थर पर लेटकर सूर्य के प्रकाश का आनंद ले रही थी। उसकी नाक पर चार काली धारियां थीं जो माथे तक खिंची हुई थीं। ज्योंहि उसने छोटे उल्लू को देखा, उसने अपनी झाड़ीदार टेढ़ी पूँछ को धीरे से हिलाते हुए अपनी आँखें छोटे उल्लू की ओर उन्मुख किया। "ऐ उल्लू! तुम सही समय पर आए हो। कृपया बताओ – ऐसा कैसे हो सकता है कि बड़ी-बिल्ली, जिसने सबको बनाया, कुछ बिल्लियों को पालतू बनने देना पसंद करती है?"

"कैसे-कैसे!" छोटे उल्लू ने आश्चर्य भरी आवाज में पुकारा।

“कल शाम को मैं इतना दूर चली गयी थी – इसके पहले कभी उतना दूर नहीं गयी थी। चलते–चलते मैं एक छोटी नदी के पास पहुंच गयी जो स्वप्नों के पर्वतों से नीचे बहती है। वहाँ मैंने लकड़ी तथा पत्थरों से बना मकान देखा जो मनुष्यों के द्वारा बनाया गया था। वहाँ से चर्बीदार मुर्गियों की सुगन्ध आ रही थी। परन्तु मैं खा चुकी थी तथा केवल दूर से थोड़ा देखना चाहती थी। एक आदमी मकान के सामने बैठा था तथा उसकी गोद में एक बिल्ली थी जिसे वह सहला रहा था। उस बिल्ली ने उसे काटा नहीं, और न ही खरोंचा, परन्तु वह केवल गुर्रायी। मैं सिहर सी गई – स्वयं को स्पर्श करने देना! – कररररर – यह कैसे संभव हो सकता है?”

छोटे उल्लू ने अपना सिर हिलाया और चहचहाते हुए कहा – “मैं कैसे जान सकता हूँ?” जंगली बिल्ली उठ खड़ी हुई, उसकी टेढ़ी पूँछ फुल गई तथा उसकी गर्दन की बालें खड़ी हो गईं। उसकी आँखें चमकीं तथा हरी–पीली हो गईं। “तुम कैसे यूं पूछ सकते हो?” – बिल्ली ने फुसकार भरी – “आखिर तुम एक उल्लू हो! उल्लू अक्लमंद होते हैं और विश्व के प्रश्नों के जवाब जानते हैं!” “मैं यह नहीं जानता था” – भयभीत होते हुए छोटे उल्लू ने जवाब दिया। “तो फिर तुम यहां क्यों हो?” – जंगली बिल्ली ने कहा – “शर्म है तुम पर और देखो, तुम तुम यहाँ से दफा हो जाओ।” छोटा उल्लू परेशान हो गया तथा पंख फैलाकर उड़ गया। उसने एक वृक्ष पाया जिसका तना लम्बा और चोटी ऊँची थी तथा जिसपर अस्त होते हुए सूर्य की किरणें चमक रहीं थीं। छोटा उल्लू सबसे नीचे की टहनी पर बैठ गया और सोचने का प्रयास करने लगा।

अचानक जमीन से भारी पंखों के फड़फड़ाने की आवाज आई और कुछ ही क्षणों में एक मोर छोटे उल्लू के पास पहुंच गया। उसके बोझ से टहनी हिलने लगी। “फिर एक बार सफल हो गया” – मोर ने भारी आवाज में कहा। “प्रत्येक शाम को सोने जाने से पहले ऐसा ही संघर्ष करना पड़ता है। मैं उतनी अच्छी तरह से क्यों नहीं उड़ सकता जितना कि मैं दौड़ सकता हूँ? अरे! यहाँ कौन बैठा है? ऐ छोटे प्राणी! यह मेरे सोने की जगह है।”

“क्षमा कीजिए” – छोटे उल्लू ने कर्र–कर्र आवाज में जवाब दिया। मोर ने अपनी लम्बी पंख हिलाई और कहा –“अरे उल्लू, मैं आवाज से ही अन्दाजा लगा लिया था, तुम्हारी आवाज तुमसे ठीक मेल खाती है।” उसने अपनी पूंछ को संभाला और नीचे लटकने दिया। फिर उसने कहना जारी रखा – “मेरे पास एक सवाल है जो मुझे कभी चैन से नहीं रहने देता। – बड़े–मोर ने सबकुछ का सृजन किया पर हमारे सोने के बहुत कम वृक्ष उगने दिया, ऐसा क्यों?” “एह–एह –ऐसे कैसे?” –छोटे उल्लू ने सवाल किया। “तुम देख तो सकते ही हो, कितना लम्बा मेरा पूंछ है।” – मोर ने कहा। “मैं इसे पंखों की तरह फैला सकता हूँ पर जब मैं सुरक्षित सोना चाहता हूँ तो यह मुझे कष्ट देती है। केवल बहुत ऊँचे पेड़ अपनी ऊँची टहनियों के साथ मेरे लिए लाभदायक होते हैं। और ऐसे पेड़ इस जंगल में बहुत कम हैं।”

“पर तुम्हारे सोने के लिए यह पेड़ तो है ही!” – छोटे उल्लू ने फुसफुसाया।

“मेरे पास अगर और तीन या चार ऐसे पेड़ चुनने के लिए रहते तो अच्छा होता।” मोर ने चिल्लाया। “मुझे जवाब दो, इस प्रकार का प्रबंध मेरे लिए क्यों नहीं किया गया?”

“मैं नहीं जानता” छोटे उल्लू ने जवाब दिया।

मोर ने अपना सिर हलके से झुकाया जिससे उसके सिर का नीला पंख छोटे उल्लू के सीने के पंख को स्पर्श करने लगा। मोर ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा – "तुम यह नहीं जानते! पर तुम क्यों नहीं जानते? उल्लू तो विश्व के सभी प्रश्नों का जवाब जानते हैं!"

"मैं नहीं जानता था कि यह विश्व का प्रश्न था।" छोटे उल्लू ने स्वीकार किया।

"छोटे मूर्ख, तब तो तुम सही मायने में उल्लू नहीं हो।" मोर ने कड़क स्वर में कहा। "शर्म है तुझपर, और देखो, तुम यहाँ से दफा हो जाओ।" छोटा उल्लू भयभीत हो वहाँ से उड़ पड़ा।

उड़ते–उड़ते उसे चट्टान के भीतर एक गुफा दिखाई दिया। वह उस गुफे के एक छोटे खोखले पर बैठ गया ताकि वह आराम कर सके और सोच सके। "मुझे स्वंय पर क्यों शर्मिन्दा होना चाहिए?" उसने अपने–आप से कहा। "मैं विश्व भर के सवालों का जवाब क्यों जानूं? जंगली बिल्ली क्यों कहती है कि बड़ी–बिल्ली ने सब कुछ को बनाया और मोर क्यों कहता है कि बड़े–मोर ने सबका सृजन किया? पर यह तो बड़ा–उल्लू था जिसने हर वस्तु को बनाया।"

सूर्य स्वप्न के पर्वतों के पीछे छिप चुका था। पश्चिमी आसमान में तारे चमक रहे थे और चन्द्रमा धीरे–धीरे पेड़ों की चाटियों के ऊपर आ रहा था। उसकी किरणें गुफा के अंदर जाने लगीं। और छोटा उल्लू सफेद चाँदनी पर प्रसन्न हो रहा था।

"उड़कर बाहर जाने का समय है" – पीछे से एक आवाज गूँजी। "क्या ही सुन्दर हल्की रात्रि है। धन्यवाद बड़े–चमगादड़ को, जिसने हर वस्तु को बनाया।"

छोटे उल्लू ने अपना सिर घुमाया तो पता चला कि एक चमगदड़ दीवार के नीचे लटक रहा है। वह पैरों के अँगूठों तथा उंगलियों के सहारे चट्टान से चिपका था। अब उसने पंखों को कुछ तेल देने के लिए फैलाया। अपनी जबान से उसने कुछ तरल पदार्थ पकड़े जो नथूनों से निकल रहा था तथा उसको चमड़ी पर फैला दिया।

अचानक उल्लू ने कहा – "छी–छी, इससे दुर्गन्ध आ रही है।"

"हाँ, हाँ, इसमें अवश्य तीव्र गन्ध है" चमगादड़ ने स्वीकृति दी। "यही कारण है कि मैं तुम्हारे लिए उचित आहार नहीं हूँ, मेरे प्यारे। तुम तो एक उल्लू हो। क्या यह सच है?"

"हाँ, परन्तु एक छोटा–सा। शायद सही मायने में उल्लू नहीं हूँ ....!"

"च–च–च–च, उल्लू तो उल्लू ही होते हैं। उल्लूओं के पास दुनिया के सारे सवालों के जवाब होते हैं।" चमगादड़ ने कहा। "मैं एक प्रश्न रखना चाहूँगी, मेरे प्यारे।" चमगादड़ दीवार से नीचे आया और छोटे उल्लू के चेहरे के सामने लटक गया। "देखो, कैसे रचनात्मक तरीके से मैं बनाया गया हूँ! सभी चीजों के लिए उचित। मैं अंधेरे में भी अपने आहार के लिए कीड़े पा सकता हूँ। मैं उनपर चिल्लाता हूँ और जब आवाज गूंजकर मेरे पास आती है तो मैं उनकी तरफ उड़कर उन्हें पकड़ लेता हूँ। परन्तु एक चीज का दुःख है मुझे। मैं साल में सिर्फ एक ही बच्चा देती हूँ। तितलियाँ और कीट–पतंगे बहुत से अण्डे देते हैं एवं उनमें से बहुत से बच्चे निकलते हैं। एक पर्वती चूहे के पीछे छोटे चूहों की एक लम्बी कतार लगी रहती है और लोमड़ियां भी कम–से–कम तीन बच्चे देतीं हैं। पर क्यों बड़ा–चमगादड़ जिसने सबकुछ को बनाया, मुझे केवल एक ही बच्चा प्रदान करता है?"

“मैं नहीं जानता हूँ” छोटे उल्लू ने जवाब दिया।

चमगादड़ ने आश्चर्य से आगे-पीछे झूलते हुए कहा – “तुम नहीं जानते! मैं कैसे तुम्हारा विश्वास करूं?”

“मैं यह सचमुच नहीं जानता।” दुःखभरी आवाज में छोटे उल्लू ने दोहराया। “फिर किसको जानना चाहिए, जब तुम इसे नहीं जानते?” – दुःखित होकर चमगादड़ ने प्रश्न किया। “शायद तुम सोचने का बहुत कम प्रयास करते हो, क्या यह सच है? यदि तुम्हें उत्तर मिल जाता है तो क्या तुम वापस आओगे?” छोटे उल्लू ने उत्साहपूर्वक सिर हिलाया। “ठीक है” – चमगादड़ ने चीं-चीं किया, अपने पंख फैलाये तथा रात्रि में विलीन हो गया। उसकी ऊँची चीख ने हवा को चीर दिया। उसके पीछे-पीछे कई अन्य चमगादड़ गुफे की गहराई से निकल आये। छाटे उल्लू ने देखा किस तरह वे चाँदनी में टेढ़े-मेढ़े चक्कर काट रहे थे।

अपनी विपत्ति के बावजूद छोटे उल्लू ने महसूस किया कि वह कितना भूखा था। उसने सारी रात शिकार करने में बिताया और चूहों को विद्युत के समान तेज गति से पकड़ा। जब वह खाकर तृप्त हो गया और अधिक चूहे नहीं खा सका तो उसने एक चूहे से, जिसे उसने जमीन के नीचे रेंगते हुए सुना, कहा – “ऐ नीचे वाले चूहे, हाँ तुम! मुझे जवाब दो – किस महा शक्ति ने तुम्हें, मुझे और अन्य सभी को बनाया?” कुछ समय बाद जमीन के सुराख से जवाब आई – “बड़े-चूहे ने, और कौन दूसरा? जब तुम इसे निश्चित जानते हो, तुम बुजुर्ग, सबकुछ जानने वाले! तो मुझसे इतने छल से क्यों पूछते हो? क्या तुम मुझे मेरे बिल से बाहर निकलने का लालच दे रहे हो? तुम जैसे उल्लू ही दोषी हैं जब हम में से कोई लापता हो जाता है। काश! मैं बस इतना जानता कि तुम उल्लुओं को घास खाने वाला क्यों नहीं बनाया गया!” “अथवा कोई अनाज खाने वाला” – कर्कश आवाज में छोटे उल्लू ने कहा। “नहीं, अनाज हमारे लिए हैं” – धीमी आवाज में चूहे ने चीख मारी और फिर शांत हो गया।

छोटा उल्लू ऊँची चोटी की खोज में आगे उड़ पड़ा ताकि वह कुछ आराम कर सके। “हु-हु-हु, मैं सबकुछ जानने वाला नहीं हूँ।” – छोटे उल्लू ने चिल्लाया। “मैं एक कुछ नहीं जानने वाला हूँ, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।” छोटे उल्लू के नीचे गहराई में एक भूरी परछाई एक मोटे पूँछ के साथ सरकती हुई दिखाई दी। “हंSSS!” एक गुर्राने की आवाज आई – “एक छोटी सी ज्ञान की बात, दाढ़ी की एक बाल के समान पतली-सी, अभी तुरन्त बता रहा हूँ।” छोटे उल्लू ने चारों दिशाओं में अपना सिर घुमाया और सुसकारा – “मैं सीखूंगा।” यह कहकर वह सो गया।

जब प्रातः की किरणें पत्तियों पर चमकने लगीं तो छोटा उल्लू जाग गया और गुलाबी किरणों का आनंद लेने लगा। “आज मैं क्या खोजूंगा और क्या अनुभव करूंगा?” छोटे उल्लू ने स्वयं से प्रश्न किया। उसने अपने पंख फैलाये और बिना आवाज के तेजी से प्रातःकालीन जंगल के ऊपर से स्वप्नपर्वत की दिशा में उड़ चला। उसने नीचे एक छोटी नदी देखी जो झाग से भरी थी और चमक रही थी। वह नीचे उतरा और एक घर देखा जिसका जिक्र जंगली बिल्ली ने की थी। चारों ओर शाँति का वातावरण था सिवाय कुछ मुर्गियों के जो कीड़ों की तलाश में इधर-उधर खरोंच रहीं थीं। छोटी नदी के कुछ दूर नीचे किसी व्यक्ति के गाने की आवाज सुनाई दी। छोटा उल्लू गाने की आवाज की दिशा में उड़ा और कुछ दूर में एक औरत को पाया जो बाल्टी से पानी ले रही थी।

छोटा उल्लू बेर की एक छोटी टहनी में बैठ गया एवं औरत से कहा – “तुम्हारी आवाज बहुत सुंदर है – मेरी आवाज से कई गुना सुंदर।” औरत ने ऊपर देखा और हँस पड़ी। तब उसने छोटे उल्लू से कहा – “कल्पना करो कि सभी जीव एक जैसी विशेषता रखते। क्या यह संसार में उबाऊ नहीं लगता? उदाहरण के लिए, तुम

मुझसे अच्छा देख और सुन सकते हो, उड़ने की बात तो छोड़ ही दो।" "और तुम क्यों गा रही हो" – छोटे उल्लू ने पूछा – "क्या तुम काली चिड़िया के समान अपना निवास स्थान सुरक्षित रखना चाहती हो?" "मैं गाना गाती हूँ जिससे काम करना आसान हो जाता है।" औरत ने जवाब दिया – "और कभी-कभी मैं बड़ी-माँ के सम्मान में गाती हूँ जिसने सबकुछ का सृजन किया।" "वह कहाँ रहती है?" छोटे उल्लू ने पूछा। "हर स्थान पर", औरत ने कहा – "मनुष्य अपनी आँखों से उसे नहीं देख सकते हैं। सूर्य, चन्द्रमा और तारे उसके वस्त्र एवं आभूषण मात्र हैं।" "और यदि मैं तुमसे कहूं", छोटे उल्लू ने फुसफुसाया – "कि इस नदी की मछलियाँ कहती हैं कि बड़ी-मछली ने सबकुछ को बनाया, तब?" "यह बड़ी-माँ को निश्चत की दुःखित नहीं करेगा", औरत ने जवाब दिया – "वह समस्त जीवों को प्यार करती है।" छोटे उल्लू ने अपना सिर इधर-उधर हिलाया और कुछ सोचकर कहा – "क्या बड़ी-माँ खुश होती हैं जब तुम गाना गाती हो?" "मैं ऐसी आशा करती हूँ", औरत ने कहा – "मैं उनसे बहुत-सी चीजों के लिए प्रार्थना करती हूँ, जैसे मेरे घर की छत लम्बे सालों तक टिकी रहे, मेरे मुर्गियाँ बहुत सारे अण्डे दें एवं चूजें पैदा करें, मेरा बच्चा और मैं स्वस्थ्य रहें।"

"तुम उन चीजों के लिए चिन्ता करती हो जो भविष्य में हो सकती हैं।" छोटे उल्लू ने कहा।

"ऐसा तो हर व्यक्ति करता है।" औरत ने कहा। "क्या तुम जानते हो कि आज वर्षा होने वाली है? मैं अपने कपड़े सूखे हुए पाना चाहूँगी।"

"हवा वर्षा की सूचना नहीं देती है।" यह कहकर छोटे उल्लू ने विदा ली और छोटी नदी के ऊपर की ओर उड़ गया।

दिन भर खिली धूप थी और छोटे उल्लू ने इसका भरपूर आनंद लिया। पूरे समय वह सोच-विचार करता रहा। शाम को वह स्वप्न पर्वत की ढलान की ओर उड़ पड़ा। रात होने पर उसने पेड़ों के बीच से सुनहरे तारे के समान कुछ चमक देखी। उसने चमक का पीछा किया और पाया कि वह चमक एक लकड़ी की झोपड़ी से आ रही थी। वह चमक दीवार के एक खोखले से आ रही थी और पतंगों को आकर्षित कर रही थी। छोटा उल्लू भी इस जादुई चमक से आकर्षित हुए बिना नहीं रहा। वह साहस करके धीरे-धीरे संकीर्ण स्तंभ के सहारे आगे बढ़ने लगा और एक खुली जगह के सामने बैठ गया। वह गरम चमक उसे इतना अच्छा लगा कि वह उल्लुओं का प्रिय गाना गाने लगा। उसने हूटना, चहकना और चिल्लाना शुरू कर दिया।

"एक उल्लू मेरी खिड़की पर!" एक भारी आवाज ने पुकारा। "तुम्हारा स्वागत है!" छोटे उल्लू ने पलक झपका, ताकि वह रोशनी से हटकर मनुष्य को देख सके। वहाँ एक बूढ़ा व्यक्ति था। छोटे उल्लू ने बूढ़े व्यक्ति से पूछा – "तुम वहाँ क्या कर रहे हो?" "मैं पढ़ रहा हूँ" – उसने कहा और आहिस्ते से पतंगों को एक सफेद कागज के सहारे दीया से दूर किया। "दिन मेरे लिए बहुत छोटा था इसलिए मैं अभी दीये की रोशनी में अपनी पढ़ाई जारी कर रहा हूँ। यह किताब बड़े-पिताजी के बारे में है जिसने सबकुछ को बनाया।"

"वे कहाँ रहते हैं?" छोटे उल्लू ने सवाल किया। "हर स्थान पर" बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया – "स्वर्ग के राज्य में जिसे मेरी आँखें देख नहीं सकतीं और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में।"

"क्या तुम उनसे कल के लिए प्रार्थना करते हो?" छोटे उल्लू ने पूछा।

“हाँ-हाँ, क्यों नहीं।” बूढ़े व्यक्ति ने जवाब दिया। “परन्तु मैं उनसे ज्यादातर बीते हुए समय के लिए निवेदन करता हूँ। मेरे जीवन में इतनी सारी घटनाएँ हैं जो उनकी आँखों के सामने टिक नहीं सकतीं। ये सारी घटनाएँ मुझे हमेशा व्यस्त रखती हैं।” “और यदि मैं अभी तुमसे कहूँ”, छोटे उल्लू ने फुसफुसाया, “कि कीड़े-पतंगे कहते हैं कि बड़े-पतंगे ने सबकुछ का सृजन किया है, तब....?” बूढ़े व्यक्ति ने दीनता के साथ मुस्कुराया और कहा - “बड़े-पिताजी के अलावा भला वे किसकी कल्पना कर सकते हैं?” इसपर छोटे उल्लू ने कहा - “हो सकता है, बड़ी-माँ की, जैसे कि नदी किनारे रहने वाली औरत कहती है?” बूढ़े व्यक्ति ने अपनी भौंहे चढ़ाकर कहा - “उससे मैंने बड़े-पिताजी के बारे कई बार कहा, पर लगता है मेरे कहने का उसपर कोई असर नहीं हुआ, जैसे कि मैं तुम्हारी बात से अनुमान लगा सकता हूँ। पर मैं आशा करता हूँ कि वह एक दिन जरूर वास्तविकता को जान जाएगी।”

“क्या यह ‘बड़े-पिताजी’ को दुःखित करता है जब वह औरत उसे ‘बड़ी-माँ’ कहती है?” छोटे उल्लू ने सवाल किया। बूढ़े व्यक्ति ने काफी सोच में पड़कर कहा - “कैसा अजीब सवाल है ..... मैं ऐसा नहीं सोचता। बड़े-पिताजी दयालु हैं। बल्कि मैं स्वयं डरता हूँ कि यह मुझे, एक सच्चे वफादार को, कुछ दुःखित करता है।” “इससे तुम अपना हृदय भारी मत करो।” इस तरह फुसकार कर उल्लू ने विदा ली और वहाँ से उड़ गया।

दूसरे दिन प्रातः उल्लू छोटी नदी के पास वापस आया। इस बार वहाँ उसने उस औरत को नहीं देखा पर उसके स्थान पर एक बालक को देखा। बालक नदी किनारे एक बिल्ली को गाद में लिए बैठा था तथा उसके पैर नदी की पानी में झूल रहे थे और वह मछलियों को देख रहा था। सूर्य की किरणें बच्चे, बिल्ली, पानी, पत्थर और घास पर पड़ रही थीं। बिना शोर मचाए छोटा उल्लू एक पेड़ की ठूंठ पर बैठ गया। उसकी पैनी दृष्टि दूर से प्रत्येक वस्तु को पहचान सकती थी; बच्चा कैसे बिल्ली को थपथपा रहा था; बिल्ली कैसे थपथपाया जाना पसंद कर रही थी, इतना तक कि वह नदी में तैरते मछली को भी भूल गई; कैसे लहरें चमक रहीं थीं। उल्लू बड़े प्रेम से सबका आनंद ले रहा था।

क्या बच्चे को उस आश्चर्यजनक प्राणी का नाम मालूम था जिसने हर वस्तु को बनाया और सूर्य के प्रकाश को सभी पर चमकने देता है! शायद बच्चे के पास इस रहस्य के लिए कोई नाम नहीं था पर वह इसकी उपस्थिति में अवश्य बैठा था। छोटा उल्लू यह प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा था। प्रातः तथा आनेवाले दिन न तो वहाँ उपस्थित थे और न ही उनकी आवश्यकता थी। एवं बीते हुए कल और परसों का कोई नामो-निशान और न महत्व था। छोटे उल्लू ने अपना सिर चारों दिशाओं में घुमाया और उन सभी नामों को याद करने लगा जो उस आश्चर्यजनक प्राणी को दिये गए थे। “तुम, बड़े-उल्लू जिसने सबका सृजन किया, बड़ी-जंगली-बिल्ली, बड़ा-मोर, बड़ा-चमगादड़, बड़ा-चूहा, बड़ी-माँ, बड़े-पिताजी - तुम ‘बड़ा-रहस्य-सर्वदा-अभी-है’ भी पुकारे जा सकते हो” - छोटे उल्लू ने हूट किया। बिल्ली ने अपनी एक आँख ऊपर उठायी और छोटे उल्लू पर पलक मारी - “क्यों नहीं” उसने शिथिलता से म्याउं किया।

सूर्यास्त होने के बाद छोटा उल्लू जंगल में वापस चला गया। वह चूहे की सूराख की खोज में लग गया तथा सूराख मिल जाने पर उसने चीखा - “हू-हू-हू-हू! सभी जीवित प्राणी जीवितों से पैदा होते हैं। तुम्हारे अनाज में भी जीवन की शक्ति है!” जैसे वह आगे उड़ा, उसकी मुलाकात चमगादड़ से हुई। “तुम कितना अच्छा उड़ सकते हो”, छोटे उल्लू ने कहा - “यदि तुम्हें एक से ज्यादा बच्चे अपने शरीर में वहन करने होते, तो तुम्हारा शरीर तुम्हारे पंखों के लिए बहुत भारी होता।” “शायद तुम सही हो सकते हो”, चमगादड़ ने सहमति जतायी।

छोटा उल्लू उस पेड़ के ऊपर उड़ा जिसपर मोर सोता था। “बेचारा घमंडी मोर”, छोटे उल्लू ने सोचा। “वह मुर्गियों की भाँति कूं-कूं करने वाले प्राणियों के वर्ग में आता है, पर उसका स्वार्थ तो देखो, वह सोने के लिए एक से अधिक पेड़ चाहता है।” कुछ दूर आगे उड़ने पर छोटे उल्लू ने जंगली बिल्ली को देखा जो एक चौड़ी डाली पर शिकार की टोह में बैठी थी। उसकी आँखें चमक उठी जैसे ही उसने छोटे उल्लू को देखा। “क्या तुम अक्लमंद हो गए”, जंगली बिल्ली ने गुर्राया। “बहुत ज्यादा नहीं क्योंकि मैं छोटा हूँ और अभी तो मैं सीख ही रहा हूँ”, छोटे उल्लू ने विनादी भाव से कहा – “संयोग से मैंने भी एक बिल्ली को देखा जो एक बालक के द्वारा थपथपाई जा रही थी। इतना तक कि नदी में तैरती मछलियाँ भी उसे बालक के गोद से नहीं निकाल सकीं।”

“उपद्रवी”, जंगली बिल्ली ने क्रोधित आवाज में गुर्राया। “यदि सारे जीव एक जैसा होते एवं एक जैसा अनुभव करते, तो क्या यह उबाऊ न लगता?” छोटे उल्लू ने प्रश्न किया – “क्या यह ठीक नहीं है कि बड़ा-रहस्य जिसे तुम बड़ी-बिल्ली कहती हो, कई सारी संभवनाएँ प्रदान करता है?” जंगली बिल्ली ने कोई जवाब नहीं दिया और छोटा उल्लू वहाँ से आगे उड़ गया।

अन्त में छोटा उल्लू अपने माता-पिता से मुलाकात करने के लिए उस पेड़ के पास गया जिस पर उनका घर था। छोटे उल्लू के माता-पिता ने उसका स्वागत करते हुए कहा – “क्या बड़े-उल्लू ने, जिसने सबका सृजन किया, तुम्हें बहुत सारा अनुभव करने दिया?” “हाँ, बहुत सारा”, छोटे उल्लू ने शाँतिपूर्वक जवाब दिया। “और अब से आगे मैं आपको एवं सभी जीवों को उसके बारे में बताऊँगा।” “ऐसा ही करो, मेरे बच्चे”, छोटे उल्लू की माँ ने जवाब दिया। और छोटे उल्लू के पिताजी ने कहा – “केवल मनुष्यों के साथ तुम्हें कठिनाई होगी। वे किसी पर बहुत ही कम विश्वास करते हैं।” छोटे उल्लू ने अपना सिर घुमाया और चींखते हुए कहा – “मैं इतनी दूर तक उड़ता रहूँगा, जब तक कि मैं किसी को ढूँढ नहीं लेता जो मेरी बातों पर विश्वास करे।”